॥ ओ३म्॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

अनमोल वचन

तमाहुतमशीमहि।

(अथर्व० 13.1.60)

हम यज्ञशेष का भोग करें।

वर्ष ३३, अंक २४ एक प्रति : ३ रुपये

सोमवार ३ मई, २०१० से ९ मई, २०१० तक

विक्रमी सम्वत् २०६७ दयानन्दाब्द : १८७

सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१११ वार्षिक : १५० रुपये

फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

Website : www.delhisabha.com पृष्ठ १ से ८ तक

राष्ट्रवादी भावना को बनाए रखने के लिए हुई सेवाश्रम संघ की स्थापना

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ का संक्षिप्त इतिहास

कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए ठोस योजना की आवश्यकता

आर्य संदेश के गत अंकों में आप अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा पूर्वोत्तर में संचालित केन्द्रों के बारे में पढ़ चुके हैं। इस अंक में हम सेवाश्रम संघ का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत कर रहे हैं।

आर्यसमाज के परम लक्ष्य **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** की व्याख्या इतनी विस्तृत है कि जिसको लिख पाना इतना आसान कार्य नहीं है; किन्तु लक्ष्य है तो है। उस लक्ष्य की ओर बढ़ना भी चाहिए। अगर हम आगे नहीं बढ़ रहे हैं तो इसका अर्थ कहीं न कहीं यह भी है कि हम पीछे हट रहे हैं; क्योंकि यदि आप अपना विस्तार नहीं कर रहे हैं, तो दुनिया अपने विस्तार में लगी ही हुई है। शायद इन्हीं सब बातों पर विचार करते हुए आर्यसमाज के कर्णधारों ने जिनमें स्वनामधन्य श्री ओमप्रकाश जी त्यागी, स्व0 पृथ्वीराज शास्त्री जी जिनके तप और साधना का यह सुपरिणाम है। उन्होंने उक्त लक्ष्य को पूरा करने के लिए आज से लगभग 40 वर्ष पूर्व एक महान संकल्प की नींव डाली। इस महान् संकल्प में एक दर्द छिपा था। वह दर्द हिन्दू समाज के उस तबके को लेकर था जिस तबके को हमने गले लगाया नहीं और ईसाई मिशनरियों ने उन सभी को ईसाई बनाने के लिए कच्चे माल के तौर पर प्रयोग किया।

यह प्रक्रिया इतनी बढ़ती गई की सारी स्थितियां काबू से बाहर होती दिखाई देने

– **शेष पृष्ठ 7 पर**

आश्रमों में चलने वाली गतिविधियां : ★ प्रातः–सायं यज्ञ एवं संध्या ★ आर्यसमाज के भजनों का अभ्यास ★ खेलकूद ★ अतिरिक्त कक्षाएं ★ संध्या, हवन एवं दैनिक प्रयोग में आने वाले मन्त्रों का रोमन लिपि में अध्यापन ★ समय–समय पर गरीब बच्चों को पुस्तकें एवं वस्त्र आदि प्रदान करना ★ राष्ट्रीय विषयों पर व्याख्यान का आयोजन ★ आर्यसमाज महर्षि दयानन्द के विचारों के बारे में जानकारी देना एवं गोष्ठी का आयोजन।

यज्ञ प्रार्थना को रोमन लिपि के माध्यम से हिन्दी में बोलना सीखते बच्चे। प्रशिक्षण के उपरान्त संध्या–हवन के मन्त्र पढ़ते हुए बच्चे।

यज्ञ परोपकार का सर्वोत्तम साधन है – धर्मपाल आर्य

आर्यसमाज विज्ञान नगर कोटा के वार्षिकोत्सव पर राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ सम्पन्न

आतंकवाद विश्व की एक प्रमुख समस्या है। किसी दूसरे के अधिकार या सम्पत्तियों को जबरन अपने कब्जे में लेना और अपने अधिकार क्षेत्र से बाहर निकलना आतंकवाद की मूल अवधारणा है। उक्त विचार आर्य नेता आचार्य धर्मपाल जी आर्य (पूर्व प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली) ने 18 अप्रैल 2010 को आर्यसमाज विज्ञान नगर कोटा (राज0) के वार्षिकोत्सव पर आयोजित राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ के अवसर पर प्रकट किये। उन्होंने कहा कि हम मर्यादा में रहें तो हमें भी संसार के सभी प्राणियों का प्यार मिलता है। यज्ञ परोपकार का सर्वोत्तम साधन है। महायज्ञ के ब्रह्मा आचार्य विद्यादेव जी

– **शेष पृष्ठ 5 पर**

वार्षिकोत्सव पर प्रवचन करते श्री धर्मपाल आर्य जी, साथ में हैं यज्ञ ब्रह्मा आचार्य विद्यादेव जी। →

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की समानान्तर सभा को लेकर चला आ रहा विवाद समाप्त

आर्य सन्देश के सुधी पाठकों को स्मरण होगा कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समानान्तर किन्हीं कारणों से श्री वैद्य इन्द्रदेव एवं श्री नरेन्द्र आर्य द्वारा समानान्तर समिति चलायी जा रही थी जिससे आर्यसमाज के कार्यों का कहीं न कहीं अहित हो रहा था। इस बात को सभी आर्यजन अनुभव कर रहे थे। इस विषय की अधिक चर्चा न करते हुए हम आपको यह सूचित करना चाहेंगे कि गत दिनों श्री वैद्य इन्द्रदेव एवं श्री नरेन्द्र आर्य ने स्वेच्छा से स्वयं को इस विवाद से पृथक् कर लिया तथा उन्होंने कोर्ट में इस विषय में शपथपूर्वक घोषणापत्र दिया कि दिल्ली में वर्तमान में एक ही दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यरत है जिसका पंजीकृत कार्यालय 15 –हनुमान रोड, नई दिल्ली है। उसके प्रधान ब्र0 राज सिंह जी आर्य एवं महामंत्री श्री विनय आर्य हैं। संगठन और आर्यसमाज के हित में लिए गए उक्त निर्णय का हम सभी स्वागत करते हैं। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा भी उनके द्वारा उनके विरुद्ध कोर्ट में चल रहे मुकदमे को वापस ले लिया गया है। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी ने भी संगठन के हित में लिए गए इस निर्णय के प्रति अपना साधुवाद प्रदान किया।

– विनय आर्य, महामन्त्री, 9958174441

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती प्रधान बने

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन 7 मार्च, 2010 को स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में आर्यसमाज सम्बलपुर में सम्पन्न हुआ, जिसमें स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती को आगामी तीन वर्षों के लिए प्रधान निर्वाचित घोषित किया गया। श्री विशिकेशन शास्त्री को कार्यकारी प्रधान, डॉ. विकास जी पंडा को मन्त्री एवं श्री योगेन्द्र कुमार उपाध्याय को कोषाध्यक्ष चुना गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारियों की ओर से नव निर्वाचित सभा प्रधान स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती एवं समस्त कार्यकारणी को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई।

कुछ अमृत कण

सत्यार्थ–प्रकाश के प्रथम संस्करण अत्यन्त उपयोगी स्थलों का संग्रह

चतुर्थ–समुल्लास

जन्म से नहीं अपितु गुण–कर्म के अनुसार ही वर्ण व्यवस्था।

वेद एवं वेदानुकूल समस्त आर्ष साहित्य जन्म से वर्णव्यवस्था को मान्यता नहीं प्रदान करते। वेद, मनु आदि ऋषियों की स्पष्ट मान्यता थी कि जन्मना शूद्र ब्राह्मणत्व और जन्मना ब्राह्मण शूद्रत्व को (अपने गुण–कर्म से) प्राप्त हो सकता है। क्षत्रिय और वैश्य के विषय में भी ऐसा ही जानना चाहिए (मनु010/65)। इसी प्रकार धर्माचरण से निकृष्ट वर्ण अपने से उत्तम–उत्तम वर्ण को प्राप्त होता है और अधर्माचरण से उत्तम वर्ण निकृष्ट–निकृष्ट वर्ण को प्राप्त होता है (आपस्तम्ब धर्मसूत्र 2/5/11/ 10,11)। महर्षि दयानन्द सरस्वती भी इसी तर्कसंगत–विवेकपूर्ण परंपरा में श्रद्धा रखते हैं। अब प्रश्न यह है कि जन्म से वर्णव्यवस्था (= वर्ण निर्धारण) न होकर, गुण–कर्म से होने पर किस आयु में और किस पद्धति से व्यक्ति का वर्ण निर्धारित किया जाये? महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में इसका उत्तर इस प्रकार दिया–''गुण–कर्मों से वर्णों की व्यवस्था कन्याओं की सोलहवें वर्ष और पुरुषों की पच्चीसवें वर्ष की परीक्षा में नियत करनी चाहिए।'' और परीक्षा की पद्धति कैसी हो इसकी विधि महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश के प्रथम संस्करण के चतुर्थ समुल्लास में इस प्रकार प्रस्तुत की–

"पुरुषों और कन्याओं का ब्रह्मचर्याश्रम और विद्या जब पूर्ण जो जाय, तब जो देश का राजा होय और अन्य जितने विद्वान् लोग वे सब उसकी परीक्षा यथावत् करें। जिस पुरुष वा कन्या में श्रेष्ठ गुण, जितेन्द्रियता, सत्यवचन, निरभिमान, उत्तमबुद्धि, पूर्णविद्या, मधुरवाणी, कृतज्ञता, विद्या और गुण के प्रकाश में अत्यन्त प्रीति, जिसमें काम–क्रोध–लोभ–मोह–भय–शोक–कृतघ्नता–छल–कपट–ईर्ष्या द्वेषादिक दोष न होवैं, पूर्ण कृपा से सब लोगों का कल्याण चाहे, उस को ब्राह्मण का अधिकार देवैं। *– क्रमशः*

Cont. form last issue **The Sixteen Rituals of Aaryas**

Upnayan Sanskaar

(The ritual of investiture with the sacred thread)

The main task in Upanayan Sanskaar is to don the Yajyopaveeta (the brahmanical sacred thread. According to Grihyasutras, the ritual of donning the brahmanical sacred thread should be performed during the eighth year after birth for Brahmins (intellectual community), eleventh year for Kshatriyas (warrior community) and twelfth year for Vaishyas (business community).

The implication of Upanayan sanskaar is that up to this point the parents were striving hard to impinge good impressions on the child's life, which would help him become an excellent human being. Now, they are about to commence his education with a Guru who – being involved in the task of moulding the children's life- gives a new direction to the child's life based on his/her inclinations.

The sacred thread comprising of three cords is put across the child's body. Wearing this signifies that the child has started formal education. Now a days when the child gets admission in the school his/her name is enrolled in the school register. Likewise, wearing the sacred thread used to be considered a mark of commencement of education. In a country where this ritual was prevalent, how could anyone remain uneducated? Every child was supposed to pass through this ceremony. If a child did not go through this ritual, he could be questioned for it by neighbours and relatives. Some people say that in the earlier times, the sacred thread used to be worn over the clothing so that the child goes to a teacher for education.

- *Gyaaneshwaraarya,* *Darshanacacharya*
To be continued....

प्रेरक प्रसंगः –

जब तक आर्यसमाज मन्दिर नहीं बन जाता

यह घटना उत्तर प्रदेश के प्रयाग नगर की है। पूज्य पण्डित गंगाप्रसाद जी उपाध्याय अपने स्वगृह दया–निवास (जिसमें कला प्रेस था) का निर्माण करवा रहे थे। घर पूर्णता की ओर बढ़ रहा था। एक दिन उपाध्याय जी निर्माण कार्य का निरीक्षण कर रहे थे। अनायास ही मन में आया कि मेरा घर तो बन रहा है, मेरे आर्यसमाज का मन्दिर नहीं है। यह बड़े दुःख की बात है। इस विचार के आते ही भवन निर्माण का कार्य वहीं रुकवा दिया। अब आर्यसमाज के मंदिर निर्माण का उपाय खोजने लगे। ईश्वर की कृपा से उपाध्याय जी का पुरुषार्थ तथा धर्मभाव रंग लाया। मन्दिर का भवन भी बन गया। उसी मंदिर में आगे 'कलादेवी हाल' निर्मित हुआ। मैं यह घटना अपनी स्मृति के आधार पर लिख रहा हूं। घटना का मूल स्वरूप यही है वर्णन में भेद हो सकता है। यह घटना अपने एक लेख में किसी प्रसंग में स्वयं उपाध्याय जी ने उर्दू रिफार्मर साप्ताहिक में दी थी। उपाध्याय जी के जीवन की ऐसी छोटी–छोटी, अत्यन्त प्रेरणाप्रद घटनाएं उनके जीवन–चरित्र 'व्यक्ति से व्यक्तित्व' में दी हैं; परन्तु अब आर्यसमाजी स्वाध्याय से अब कोसों दूर भागते हैं। स्वाध्याय धर्म का एक खम्बा है। इसके बिना धार्मिक जीवन है ही क्या।

(साभारः राजेन्द्र जिज्ञासु,
'तड़पवाले तड़पाती जिनकी कहानी')

देववाणी : संस्कृत

स्वामिदयानन्दस्य दार्शनिकं चिन्तनम्

गतांक से आगे :–

तस्माद् दयानन्दस्य दार्शनिकचिन्तनस्य लक्ष्यद्वयमासीत्–मूलतत्त्वानां वैदिकपरम्परानुरूपा व्याख्या अथ च अवैदिकविचारसम्मर्दमर्दनञ्च। आस्तिकनास्तिकयोः वादस्तु अनादिर्विद्यते परं नास्तिकैः सममास्तिकनामपि समाधिः ततोऽप्यधिकं महद्दुष्करं कार्यमासीत्।

एते सर्वेऽपि वादाः स्वयं समिद्ध्य अन्यानपि समेधयन्ति स्म। कार्यकारणरूपैषा अनर्थकारिणी परम्परा, तन्निरोधः तत्सममेव सत्यसिद्धान्तप्रभवप्रबन्धश्च अनन्यसाधारणमेतत् कृत्यम्। यद्यपि शास्त्रैः चिकित्सा भवति परं यदा शास्त्रचिकित्सायाः एव समागतः अवसरः तदा महर्षिणा त्रैतवादेन दार्शनिकचिन्तनचिकित्सा प्रारब्ध। उद्घोषितं तैः यत् तिस्र एव अनादि सत्ता ईश्वरो जीवः प्रकृतिश्च। ईश्वरविषयिकी वैदिकावधारणा सिद्धान्तश्च प्रतिपादितः यत्–

''जिसके ब्रह्म परमात्मादि नाम हैं, जो सच्चिदानन्दादि लक्षणयुक्त है, जिसके गुण, कर्म, स्वभाव, पवित्र हैं। जो सर्वत्र निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनन्त, सर्वशक्तिमान् दयालु, न्यायकारी........आदि लक्षणयुक्त है, उसी को परमेश्वर मानता हूँ।'' – स्वमन्तव्या0

उपासनाविषयेऽपि ईश्वरस्य निर्गुण निराकारत्वात् अस्मिन्नैव रूपे सः पूजयितव्यः अत्र महान् आग्रहो वर्तते दयानन्द स्वामिनाम्। मूर्तिपूजाविरोधे अग्रगण्य अग्रनायकोऽयं दार्शनिकः। महर्षिणा ऋग्वेदभाष्येऽपि प्रोक्तं यत् – ***"सर्वैमनुष्यैः परमेश्वरस्यैव पूजा कार्य्या अर्थात्तदाज्ञायां सदा वर्त्तितव्यम्, वेदविद्यामप्यधीत्य सम्यग्विदित्वोपदेशेनोत्कृष्टैर्गुणैः सह मनुष्यवंश उद्यमवान् क्रियते, तथैव स्वैरपि भवितव्यम्। नेदं फलं परमेश्वरं विहायान्यपूजकः प्राप्तुमर्हति। कुतः ईश्वरस्याज्ञाभावेन तत्सदृशस्यान्यवस्तुनो ह्यविद्यमानत्वात् तस्मात्तस्यैव गानमर्चनं च कर्त्तव्यमिति।"*** (ऋ0 1–3–10–1)

''यदा कश्चित्पृच्छेदीश्वरः कियानस्तीति तत्रेदमुत्तरं येन सर्वमाकाशदिकं व्याप्तं नैव तमनन्तं कश्चिदप्यर्थो व्याप्तुमर्हति। अतोऽयमेव सवैर्मनुष्यैः सेवनीयः। यस्य गुणाः कर्माणि चेयत्तारहितानि सन्ति तस्यान्तं ग्रहीतुं कः समर्थो भवेत्। '' (ऋ01–3–10–8)

एवमीश्वरस्य सत्ता अनवराध्यां जीवस्तु तस्मिन् आनन्दमहोदधौ तत्सख्यमनुभूत कृतकृत्यो भवति। जीवस्य स्वरूपविषये उक्तं तैः यत्–

''जो इच्छा, द्वेष, सुख और ज्ञानादि गुणयुक्त अल्पज्ञ नित्य है उसी को जीव मानता हूँ।'' – स्वमन्तव्या0–4

सृष्टिरचनायाम् ईश्वरः निमित्तकारणं जगदुपादानकारणं, जीवः साधारणनिमित्तकारणं दिग्कालाकाशादीनि च साधारणकारणम् वर्तते। वस्तुतः उपस्थितं परित्यज्य अनुपस्थितं याचते इति स्वामिनां दार्शनिकविवेचनधर्मो नास्ति। सत्यार्थ प्रकाशस्य प्रथम समुल्लास एवं महर्षिभिः समुपस्थापिता त्रैतवादस्य भूमिका, जीवेश्वरयोश्च भेदः। तत्रोक्तं यत् वैदिकप्रमाण सन्दर्भेषु स्तुति–प्रार्थनोपासना–सर्वज्ञ–व्यापक–शुद्ध–सनातन–सृष्टिकर्त्तादीनि सन्ति यत्र विशेषणानि तत्र –तत्र परमेश्वरस्य ग्रहणम्। यत्र प्रमाणेषु विराट् पुरुष, देवः आकाशं, वायुः अग्नीत्यादीनि सन्ति नामानि तत्र लौकिकपदार्थस्य ग्रहणं बोद्धव्यम्, कुतः?

– चेतना विभूति वेदी, शोधच्छात्रा, पुणे –क्रमशः

विनाशकाले विपरीत बुद्धिः

– महात्मा आनन्द स्वामी

आयुर्वेद–शास्त्र के महान् ग्रन्थकार 'चरक' को लिखने वाले महर्षि पुनर्वसु अपने अद्वितीय ग्रन्थ को लिखने के पश्चात् एक जंगल में चले जा रहे थे। घने जंगल की पगडंडी पर आगे वे थे, पीछे उनका शिष्य अग्निवेश।

एकदम महर्षि पुनर्वसु खड़े हो गये। आगे की ओर देखा उन्होंने, चारों ओर देखा। एक लम्बी सांस लेकर बोले– ''महानाश आने वाला है।''

अग्निवेश ने पूछा–'' कैसा महानाश, गुरुदेव?''

पुनर्वसु बोले–'' मैं देखता हूं कि जल बिगड़ रहा है, पृथिवी बिगड़ रही है, वायु, तारे, आकाश, सूर्य और चन्द्र बिगड़ रहे हैं। अरे, अनाज अपनी शक्ति छोड़ देगा। ओषधियां अपना प्रभाव छोड़ देंगी। पृथिवी पर टूटते तारे गिरेंगे। विनाश करने वाली ओषधियां चलेंगी। विनाशकारी भूकंप उठेंगे। बड़े–बड़े बम गिरेंगे। महानाश का ताण्डव जाग उठेगा। मनुष्य बचेगा नहीं, बचेगा नहीं।''

यह कथा चरक के विमान स्थान के तीसरे अध्याय में आती है। इसमें लिखा है कि अग्निवेश ने जब यह भयानक भविष्यवाणी सुनी तो हाथ जोड़कर कहा–'' गुरुदेव! आप यह भयभीत करने वाली भविष्य गाथा क्यों कर रहे हैं? सब रोग का सामना कर सकें, ऐसा ग्रन्थ आपने लिख दिया। दुनिया के प्रत्येक रोग का इलाज लिख दिया। फिर भी यह विनाश आयेगा तो क्यों?''

महर्षि पुनर्वसु ने कहा– ''इसलिए आयेगा कि लोग धर्म को छोड़ अधर्म की ओर चल पड़ेंगे– सत्य को छोड़कर असत्य की ओर। सत्य और धर्म में रुचि नहीं रहेगी।''

अग्निवेश ने पूछा– ''धर्म और सत्य की ओर मनुष्य की रुचि न रहने का कारण क्या होगा, गुरुदेव?'' गुरु बोले–''बुद्धि का बिगड़ जाना ही इस महानाश का कारण होगा। जब बुद्धि बिगड़ जाती है, जब सत्य का मार्ग छोड़कर असत्य की ओर बढ़ती है तब धर्म में रुचि नहीं रहती।''

बुद्धि का बिगड़ जाना ही सब रोगों का कारण है, परन्तु बुद्धि के बिगड़ जाने से केवल शारीरिक रोग पैदा नहीं होते हैं। इसीलिए कहते हैं कि जब विनाश का समय निकट आता है तब बुद्धि उलटे मार्ग पर चलने लगती है। श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं– बुद्धिनाशात्प्रणश्यति। बुद्धि का नाश होने से महानाश जाग उठता है।

ऐतिहासिक लेख

महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं आर्यसमाज से सम्बद्ध डाकटिकटें

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की थी और उसके दस नियम बनाये थे। आर्यसमाज का उद्देश्य वैदिक धर्म और आर्य संस्कृति का पुनरुद्धार और प्रचार–प्रसार करना है। आर्यसमाज आन्दोलन का नाम है। यह संसार भर के मानवों को सत्य के ग्रहण और असत्य के परित्याग के लिए प्रोत्साहित करता है। इसका मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना अर्थात् लोगों को शारीरिक दृष्टि से बलवान बनाना और आध्यात्मिक और सामाजिक दृष्टि से उन्नत करना है। आर्यसमाज जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए सभी क्षेत्रों में और आधुनिक भारत के निर्माण में विशिष्ट भूमिका निभाता आ रहा है। आर्यसमाज की भारत और विदेशों में अनेक शाखाएं हैं। साथ ही, स्कूलों, कॉलेजों, गुरुकुलों, अनाथालयों, विधवाश्रमों व वनिताश्रमों आदि के रूप में इसकी संस्थाओं का जाल बिछा है।

भारत सरकार डाक–तार विभाग ने आर्यसमाज के सर्वहितकारी कार्यों को देखते हुए एवं आर्यसमाज के योगदान को ध्यान में रखते हुए समय–समय पर अनेक डाक टिकटें जारी की हैं। यहां उसी की चर्चा की जा रही है–

आर्यसमाज 1875–2000 : आर्य समाज नस्ल, जाति और धर्म के भेदभाव के बिना सबके साथ प्रेम, न्याय और नेक व्यवहार की सीख देता है। आर्यसमाज का लक्ष्य है "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" अर्थात् "इस विश्व को श्रेष्ठ बनाओ।" स्वामी दयानन्द एक महान संत तथा निर्भीक समाज सुधारक थे। उन्होंने भारत में राष्ट्रवाद की भावना जागृत की। उनके उपदेशों का सत्व 'सत्यार्थप्रकाश' में निहित है। वेदों के उपदेशों, जिन्हें सार रूप में 10 मूलभूत सिद्धांत (अर्थात् धर्मादेश) में प्रतिपादित किया गया है, आर्यसमाज का मर्म है। आर्य समाज के अनेक संस्थान शिक्षा प्रदान करने, समाज सेवा एवं आध्यात्मिक कार्यकलापों में जुटे हैं तथा आर्यसमाज विश्व के विभिन्न भागों के करोड़ो लोगों को नई आशा व सही दिशा प्रदान कर रहा है। आर्यसमाज "विश्व बंधुत्व" तथा "एक धर्म" का समर्थन करता है, जिसके लिए वह इन नियमों का अनुपालन करता है–"विवेकशील बनकर तथा सदा सत्य बोलकर ईश्वर की अनुभूति करना, वैज्ञानिक एवं विवेकपूर्ण संस्कारों का विकास करना, अधिक से अधिक ज्ञान अर्जित करना जिसका उपयोग जन–कल्याण के लिए किया जा सके, अंधविश्वासी एवं कपटपूर्ण मानसिकता को नष्ट करना, भोग–विलासपूर्ण मनोाभावों को नियंत्रण में रखना, सत्पुरुषों से सम्पर्क बनाना, अच्छी और स्फूर्तिवान आदतों का विकास करना तथा दूसरों के साथ व्यवहार में ईमानदारी बरतना आदि।"

आज आर्यसमाज संगठन समूचे विश्व में सक्रिय है। डाक–टिकट के डिजाइन में आर्यसमाज द्वारा किए गये कार्य का अंकन है, जो ज्ञान एवं सत्य का प्रकाश फैला रहा है तथा इसमें संस्कृत में देवस्तुति ***"तमसो मा ज्योतिर्गमय"*** अर्थात् हमें अंधकार से निकालकर प्रकाश की ओर प्रशस्त करो' भी अंकित है। यह डाक–टिकट आर्यसमाज के संस्थापक, स्वामी दयाननद सरस्वती का अभिनन्दन करता है। प्रथम दिवस आवरण पर संगठन के लक्ष्य "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" अर्थात् आइए समूचे विश्व को श्रेष्ठ बनाने का अंकन है। डाक विभाग आर्यसमाज द्वारा मानवता को प्रदान की जा रही अमूल्य सेवाओं के सम्मान में यह स्मारक डाक–टिकट जारी किया गया।

स्वामी विरजानन्द–आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती के सुप्रसिद्ध गुरु स्वामी विरजानन्द का जन्म जालंधर के समीप एक स्थान में एक ब्राह्मण परिवार में सन् 1778 ई. में हुआ। पांच वर्ष की अल्पायु में ही चेचक के प्रकोप से बालक विरजानन्द नेत्रहीन हो गए। उसके तुरन्त पश्चात् बालक के पिता का, जो स्वयं संस्कृत के विद्वान् थे और जिन्होंने बालक को संस्कृत विद्या की दीक्षा दी थी, स्वर्गवास हो गया। छोटी उम्र में उनके साथ ज्येष्ठ भ्राता व भाभी का बर्ताव ठीक न था, इसलिए मनमौजी विरजानन्द ने जल्दी ही उनका घर त्याग दिया। घूमते–घूमते वे ऋषिकेश पहुंचे। कुछ साल बाद वे हरिद्वार चले आए वहां स्वामी पूर्णानन्द से संपर्क हुआ। विरजानन्द ने उनसे संन्यास की दीक्षा ली। स्वामी पूर्णानन्द की प्रेरणा से विरजानन्द की संस्कृत साहित्य की अन्य विधाओं में पैठ होने लगी तथा उन्होंने अध्यापन कार्य भी प्रारंभ कर दिया। हरिद्वार के अध्ययन–अध्यापन का कार्यक्रम समाप्त करके स्वामी विरजानन्द काशी चले गए। यहां उन्होंने लगभग दस वर्ष रहकर मीमांसा, वेदान्त, आयुर्वेद आदि में दक्षता प्राप्त की। शीघ्र ही उन्होंने वाराणसी के विद्वानों में एक प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त कर लिया। वाराणसी से स्वामी विरजानन्द गया चले गए। वहां वे लगभग चार वर्ष तक रहे। गया में उन्होंने उपनिषदों का व्यापक व विवेचनात्मक अध्ययन सम्पन्न किया जिनका प्रारंभिक अध्ययन उन्होंने हरिद्वार में किया और वाराणसी में पूरा किया। गया से स्वामी विरजानन्द कलकत्ता चले आए, जो कि उस समय देश भर के संस्कृत विद्वानों के लिए एक आकर्षण केन्द्र बना हुआ था। कलकत्ता में स्वामी जी कई वर्ष तक रहे। उस नगर को त्याग कर वे गंगा के किनारे गड़िया घाट पर जाकर बस गये। यहीं पर तत्कालीन अलवर नरेश की स्वामीजी से भेंट हुई। वे स्वामीजी के बड़े प्रभावित हुए। महाराज के निमंत्रण पर स्वामीजी अलवर जाने को राजी हो गए। वहां कुछ समय तक ठहरे। महाराजा के अनुरोध पर स्वामीजी ने 'शब्द बोध' की रचना की जिसकी हस्तलिपि अलवर पुस्तकालय में अभी भी सुरक्षित है। अलवर से स्वामी विरजानन्द सोरों गए और वहां से वे भरतपुर और मुरसान होते हुए मथुरा जा पहुंचे।

मथुरा में स्वामीजी ने एक पाठशाला की स्थापना की। स्वामी दयानन्द सरस्वती उनकी शरण में व्याकरण आदि शास्त्रों का अध्ययन करने वहां पहुंचे। जब दयानन्द सरस्वती का अध्ययन काल समाप्त हुआ तो गुरुदक्षिणा बतौर स्वामी विरजानन्द ने उनसे यह प्रतिज्ञा करने की मांग की कि वे देश में आर्ष साहित्य तथा वेद–ज्ञान का निरंतर प्रचार करते रहेंगे। स्वामी दयानन्द ने गुरु के समक्ष ऐसी ही प्रतिज्ञा पालन करने का व्रत लिया। स्वामी विरजानन्द ने 90 वर्ष की आयु में कृष्ण त्रयोदशी के दिन सोमवार 14 सितम्बर 1868 को अपना नश्वर शरीर छोड़ा। डाक–तार विभाग द्वारा ऋषि के सम्मान में जारी डाकटिकट में स्वामीजी को आसन मुद्रा में दर्शाया गया है। प्रथम दिवस आवरण पर दिये गए डिजायन में स्वामी विरजानन्द के वेदों और अन्य आर्ष शास्त्रों के ज्ञान के जीवनपर्यन्त प्रचार–प्रसार का प्रतीकात्मक चित्रण किया गया है।

स्वामी श्रद्धानन्द– स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म 1913 (विक्रमी संवत्) अर्थात् सन् 1856 ईस्वी को तलवन (जालंधर) के एक जाने–माने सम्पन्न परिवार में हुआ था। उनके पिता श्री नानक चन्द ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेवा में थे। प्रारम्भ से स्वामी जी का नाम बृहस्पति रखा गया था, किन्तु बाद में उनके पिता उन्हें मुंशीराम के नाम से पुकारने लगे। संन्यास धारण करने करते उनका यही नाम चलता रहा। उनकी शिक्षा का प्रारम्भ वाराणसी से हुआ और उसका समापन लाहौर में उनके वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर हुआ। उनका विवाह श्रीमती शिवदेवी से हुआ। जब उनकी अवस्था लगभग 33 वर्ष की ही थी तो उनकी पत्नी अपने पीछे दो पुत्रों और दो पुत्रियों को छोड़कर परलोक सिधार गई। मुंशीराम ने नायब तहसीलदार के रूप में अपनी आजीविका अर्जित करनी शुरू की थी, किन्तु कुछ ही समय बाद जब उन्होंने यह देखा कि यह कार्य उनक आत्म –सम्मान के अनुरूप नहीं है, तो उन्होंने इसे छोड़ दिया। बाद में उन्होंने फिलौर और जालंधर में वकालत शुरू की, लेकिन जब स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की सेवा के लिए आह्वान किया– जो उनके लिए बड़ा सम्मोहक सिद्ध हुआ, तो उन्होंने इस खासी आमदनी वाले पेशे को भी छोड़ दिया।

उन्होंने कांगड़ी (हरिद्वार) में वैदिक ऋषियों के आदर्शों के अनुरूप एक बेजोड़ विद्या केन्द्र गुरुकुल की स्थापना की। महात्मा गांधी जब दक्षिण अफ्रीका में थे, तो सर्वप्रथम इस संस्थान ने उन्हें अपनी ओर आकृष्ट किया और भारत लौटने पर वे सबसे पहले वहीं जाकर रहे। यहीं गांधी जी को महात्मा की पदवी से विभूषित किया गया।

उन्होंने 1917 में संन्यासी बनकर श्रद्धानन्द नाम रखा। इसके बाद उन्होंने गुरुकुल के बजाय दिल्ली को अपना स्थायी निवास–स्थान बना लिया। दिल्ली में उन्होंने सामाजिक, नैतिक तथा सांस्कृतिक सुधार और जनसाधारण विशेषकर तथाकथित अछूतों की भलाई के लिए कई संस्थाओं की स्थापना की। उन्होंने दो प्रमुख दैनिक समाचार पत्रों–उर्दू 'तेज' और हिन्दी 'अर्जुन' की भी शुरुआत की। राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान 1919 में वे महात्मा गांधी के नेतृत्व में इस आन्दोलन में पूरी तरह कूद पड़े। उन्होंने जनता को उत्प्रेरित करने और ब्रिटिश सरकार द्वारा बनाये गए रौलट एक्ट को विरुद्ध हड़ताल और विरोध का संगठन करने में प्रमुख रूप से भाग लिया। स्वामी जी को भारत की सबसे बड़ी और मशहूर दिल्ली की जामा मस्जिद के व्याख्यान मंच से मुसलमानों की सभा ने भाषण देने का अद्वितीय सम्मान प्रदान किया गया था। जब वे रोग शैया पर थे, तो 23 दिसम्बर 1926 को एक गुमराह हत्यारे ने उनकी हत्या कर दी। रोग शैया से उन्होंने यह संदेश दिया था–"भारत की मुक्ति चिरस्थायी हिन्दू–मुस्लिम एकता में निहित है।" महात्मा गांधी के शब्दों में "वे एक वीर की तरह जिये और अन्त में वीर–गति को प्राप्त हुए।"

श्यामजी कृष्ण वर्मा–श्यामजी कृष्ण वर्मा का जन्म 4 अक्टूबर 1857 को गुजरात के कच्छ जिले के मांडवी ग्राम में हुआ।

बाल्यकाल में ही उनके ऊपर से माता का साया उठ गया। उनकी प्रारंभिक शिक्षा मांडवी की एक ग्रामीण पाठशाला में तथा हाई स्कूल शिक्षा भुज में हुई। वे एक असाधारण प्रतिभाशाली विद्यार्थी थे। उन्होंने संस्कृत का गहरा ज्ञान प्राप्त किया जिसके लिए उन्हें पंडित की उपाधि से विभूषित किया गया। 1875 में उनका विवाह बम्बई के एक धनी व्यापारी, सेठ छबीलदास लालूबाई की पुत्री भानुमती से हुआ।

– **शेष पृष्ठ 4 पर**

ब्रह्म–सूत्र

द्वितीय अध्याय-तृतीय पाद (24)

अवस्थिति वैशेष्यादिति
चेन्नाभ्युपगमाद् हृदि हि ।।24।।

अर्थ– (अवस्थिति वैशेष्यात्) स्थिति की विशेषता के कारण (इति चेत्) यदि ऐसा कहो तो (न) वह ठीक नहीं है।) (हि) क्योंकि (हृदि) हृदय में (अभ्युपगमात्) स्वीकार करने से।

भावार्थ– शरीर में या वनप्रदेश में एक स्थान पर चंदन के (पेड़ या इत्र) की स्थिति प्रत्यक्ष द्वारा जानी जा सकती है यानी हम उसे आँखों से देखकर या सूँघ कर अनुभव कर सकते हैं। परन्तु आत्मा को सारे शरीर को लगने वाली गर्मी या सर्दी का जो ज्ञान होता है वह तो प्रत्यक्ष अनुभव होता है, परन्तु आत्मा के एकदेशीय होने का प्रत्यक्ष नहीं होता अर्थात् किसी को स्पष्ट दिखाई नहीं देती। ऐसी अवस्था में यदि कोई कहे कि इसके लिए चन्दन का उदाहरण ठीक नहीं है तो सूत्रकार के अनुसार उसका ऐसा सोचना उपयुक्त नहीं है क्योंकि शास्त्रों में हृदय प्रदेश में आत्मा की स्थिति मानी गई है या यों कह सकते हैं कि जिन साक्षात्कृतधर्मा ऋषियों ने आत्मा का प्रत्यक्ष (अनुभव) किया है उनके अनुसार आत्मा अणु परिमाण और हृदय प्रदेश में स्थित है। मुंडक उपनिषद् (3/1/9) में कहा है कि आत्मा अणु परिमाण है–" **एषोऽणुरात्मा चेतसा वेदितव्यः**"। अर्थात् इस अणु आत्मा को शुद्ध अन्तःकरण द्वारा जाना जा सकता है। प्रश्न उपनिषद् (3/6) में कहा है– **"हृदि ह्येष आत्मा"** अर्थात् इस आत्मा का निवास हृदय प्रदेश में है। इस विषय में अन्य उपनिषदों में भी इसे हृदय में स्थित बताया है। इस प्रकार आत्मा का हृद्देश में निवास निश्चित हो जाने पर इससे पूर्व सूत्र में बताए चंदन के दृष्टान्त से कोई विरोध नहीं है। अतः चंदन के दृष्टान्त की उपयुक्तता में कोई संदेह नहीं है।

शिष्य पूछता है कि चंदन सावयव पदार्थ है। उसके सूक्ष्म अणु शरीर के सभी हिस्सों में फैल जाते हैं और वे सारे शरीर को सुवासित कर देते हैं परन्तु आत्मा निरवयव है। यदि उसे अणु परिमाण मानकर शरीर के एक विशिष्ट स्थान में स्थित मानें तो सारे शरीर को लगने वाली गर्मी–सर्दी का अनुभव उसे नहीं होना चाहिए। इसका समाधान अगले सूत्र में करेंगे।

– डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार
सी–2ए/90 जनकपुरी, नई दिल्ली–58

वेद के अतिरिक्त अन्य कोई ग्रन्थ ईश्वरीय ज्ञान नहीं हो सकता – स्वामी देवव्रत सरस्वती

वेद के अतिरिक्त अन्य कोई ग्रन्थ ईश्वरीय ज्ञान नहीं हो सकता। ये विचार स्वामी देवव्रत सरस्वती जी ने आर्यसमाज सागरपुर के 30 वें वार्षिकोत्सव 23से 25 अप्रैल के अवसर पर व्यक्त किए। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य हरिप्रसाद जी ने चतुर्वेद शतकम् परायण यज्ञ संपन्न कराया गया। 25 अप्रैल को समापन समारोह में श्री महाबल मिश्र (सांसद बाहरी दिल्ली) एवं श्री प्रद्युम्न राजपूत (विधायक) का अभिनंदन किया गया। उन्होंने अपने–अपने वक्तव्य में आर्यसमाज द्वारा किये जा रहे कल्याणकारी कार्यों की चर्चा करते हुए समाज के पदाधिकारियों की सराहना की। इस अवसर पर आर्यसमाज परिसर में बने सें ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के ए.टी.एम. का उद्घाटन श्री महाबल मिश्र एवं वी.एन.एस. रत्नाकर (महाप्रबंधक सें ट्रल बैंक, दिल्ली अंचल) ने किया। समारोह में

नवविवाहित श्रीमती मधु आर्या (सुपुत्री श्री सुखबीर सिंह आर्य, मन्त्री दिल्ली सभा) एवं श्री प्रकाश का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में स्वामी देवव्रत जी, आर्यनेता श्री धर्मपाल जी आर्य आदि ने अपने विचार प्रकट किये।

– राकेश आर्य, मन्त्री

पृष्ठ ३ का शेष

स्वामी दयानन्द सरस्वती से श्यामजी कृष्ण वर्मा अत्यंत प्रभावित हुए और बुम्बई आर्यसमाज के प्रथम सदस्य बन गए। बाद में उन्होंने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में सेवा आरंभ की और बलिओल कॉलेज में संस्कृत के सहायक प्रोफेसर नियुक्त किए गये। बाद में वे टेम्पल इन में शामिल हुए और प्रथम भारतीय बार–एट–लॉ हुए। जनवरी, 1888 में वे भारत लौटे और कुछ समय के लिए रतलाम के दीवान की नौकरी की। उन्होंने अजमेर में वकालत शुरू की और एक वकील के रूप में ख्याति प्राप्त की। वे अजमेर शहर की नगरपालिका के सदस्य बने। उन्होंने पहले अजमेर के दीवान और बाद में जूनागढ के दीवान के रूप में काम किया।

जनवरी 1905 में वे इग्लैण्ड लौटे और सक्रिय राजनीति में भाग लेने लगे। उन्होंने एक मासिक 'इंडियन सोसिऑ–लाजिस्ट' का प्रकाशन आरंभ किया। जो क्रांतिकारी विचारों का एक माध्यम बन गया। भारत में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अपनी आवाज उठाने के लिए फरवरी 1905 में उन्होंने इंडियन होम रुल सोसायटी की स्थापना की। उन्होंने पत्रक छपवाकर, पुस्तकें लिखकर और भाषण देकर भारत में ब्रिटिश शासन का कड़ा विरोध किया। उनकी राजनीतिक गतिविधियों के कारण उन्हें इंग्लैण्ड छोड़ने के लिए बाध्य कर दिया गया। वे पेरिस गये जहां भारतीय स्वतन्त्रता का समर्थन करते हुए उन्होंने अपनी गतिविधियां जारी रखीं। द्वितीय विश्व युद्ध के आरंभ होने से वे पेरिस में नहीं ठहर सके और उन्हें जेनेवा जाना पड़ा जहां उन्होंने अपना शेष जीवन बिताया। 31 मार्च, 1930 को जेनेवा में उनका देहांत हो गया।

भाई परमानन्द– भाई परमानन्द का जन्म 1876 में झेलम (अब पाकिस्तान में) जिलान्तर्गत चकवाल के समीप करयाला स्थान पर हुआ था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा चकवाल में हुई। डी.ए.वी कॉलेज, लाहौर से उन्होंने स्नातक की उपाधि प्राप्त की। इतिहास अध्ययन के लिए वे प्रेसिडेंसी कॉलेज, कलकत्ता गए; परन्तु कुछ समय बाद लाहौर लौट आए। 1902 में उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। बाद में डी.ए.वी. कॉलेज, लाहौर के स्टाफ के आजीवन सदस्य (75 रू. निश्चित भत्ता प्राप्त करने का व्रत लेकर) बन गए और इतिहास तथा राजनीतिक अर्थशास्त्र के प्राध्यापक के रूप में कई वर्षों तक सेवा करते रहे। भाई परमानन्द विशेष रूप से समाज के दो प्रख्यात नेताओं अर्थात् महात्मा हंसराज और लाला लाजपतराय का उन पर प्रभाव पड़ा। आर्यसमाज के सम्पर्क में आने से उनके समाज सुधार विषयक दृष्टिकोण को एक दिशा मिल गई। 1922 में उन्होंने 'जात–पात तोड़क मण्डल' नामक एक नए संगठन की स्थापना की। वैदिक धर्म के उपदेशक के रूप में उन्होंने सुदूर अफ्रीका के देशों और उत्तरी व दक्षिणी अमरीका की यात्रा की। जोहन्सबर्ग में वे गांधीजी के सम्पर्क में आए तो उनकी सज्जनता और प्रतिभा से इतने अधिक प्रभावित हुए कि भाई जी को उन्होंने एक मास तक अपना अतिथि बना कर रखा।

लाला हरदयाल के वे निकट सहयोगी रहे तथा एकान्तवासी लालाजी को एक कर्मठ सामाजिक कार्यकर्ता बनाने का श्रेय उन्हीं को है। गदर पार्टी के साथ उनके सम्बन्ध होने के कारण उनको लाहौर षड्यन्त्र के मामले में फांसी की सजा दी गई। अन्तिम दिन उनकी सजा में परिवर्तन कर आजीवन काला पानी दिया गया, जहां वे सेल्यूलर जेल पोर्ट ब्लेयर में 1914 से 1920 तक रहे। जब सी0एफ0एन्ड्रयूज और गांधीजी ने उनके गिरते हुए स्वास्थ्य और पारिवारिक स्थिति के बारे में लिखा तो उन्हें छोड़ दिया गया। गांधीजी और लाला लाजपत राय के जोर देने पर वे कौमी विद्यापीठ के कुलपति, इतिहास के प्राध्यापक और शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष बने तथा उसी हैसियत से अवैतनिक रूप से आजीवन सेवा करते रहे।

भगतसिंह और अन्य कई वहाँ उनके विद्यार्थी थे। उन्होंने हिन्दी तथा उर्दू में बीसियों पुस्तकें लिखीं। पत्रकारिता के क्षेत्र में भी उनका योगदान विशेष महत्वपूर्ण है। अपने इंग्लैंड प्रवास की अवधि में उन्होंने पंजाबी, हितकारी, हिन्दुस्तान, आज़ाद, इंडिया और इंकलाब नामक पत्रों के लिए लेख लिखे। लाहौर में उन्होंने साप्ताहिक हिन्दी पत्रिका 'आकाशवाणी' और उर्दू में 'हिन्दू' नामक पत्रिका निकाली। भाई परमानन्द का जीवन सीधा–सादा था, संयम उनके जीवन की कुंजी थी। 'विदेशी सत्ता से भारत की पूर्ण स्वाधीनता के वे हिमायती थे और विभाजन के विरूद्ध दृढ़ता से उन्होंने संघर्ष किया। भाई परमानन्द त्याग, निःस्वार्थ भावना, देश भक्ति, अध्यवसाय और निर्भयता की प्रतिमूर्ति थे। 8 दिसम्बर, 1947 को जालन्धर में उनका निधन हुआ।

–: संकलनकर्ता: –
धीरज कुमार वधवा, भोपाल

यज्ञ को अपने जीवन में उतारें – ब्र. राजसिंह आर्य

यज्ञ के द्वारा बीमारियों व प्रदूषण से निपटा जा सकता है। अतः हमें प्रतिदिन यज्ञ करना चाहिए। उक्त विचार ब्र. राज सिंह आर्य जी (प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) ने आर्यसमाज, पंजाबी बाग एक्सटेंशन, नई दिल्ली में 12 अप्रैल से 17 अप्रैल तक आयोजित सामवेद परायण यज्ञ के समापन पर व्यक्त किये। यज्ञ की ब्रह्मा डॉ0 करुणा थीं। कार्यक्रम में अनेक गणमान्य लोग शामिल हुए।

–धर्मपाल कुकरेजा, प्रधान

समारोह में भजन प्रस्तुत करती श्रीमती सुदेश आर्या। साथ में हैं सभा प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य।

मल्टीमीडिया हुआ आर्यसमाज सन्देश विहार

आधुनिक साधनों से करें वैदिक धर्म प्रचार – महाशय धर्मपाल

पं0 गुरुदत्त विद्यार्थी की जयन्ती के शुभ अवसर पर 25 अप्रैल को आर्यसमाज सन्देश विहार, दिल्ली–34 में मल्टीमीडिया हाल का उद्घाटन महाशय धर्मपाल जी (एम0डी0एच0) द्वारा किया गया। आचार्य अखिलेश्वर जी का प्रवचन हुआ। महाशय जी, आचार्य अखिलेश्वर जी तथा केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री राजीव आर्य का अभिनन्दन किया गया। आर्य नेता श्री धर्मपाल आर्य ने अपने विचार रखे। समारोह के अध्यक्ष श्री शशिभूषण मल्होत्रा ने कहा कि विचार टी.वी. चैनल के माध्यम से समय–समय पर लोगों को जागरूक करने के लिए जगह–जगह पर कार्यक्रम आयोजित किये जाएंगे।

– दुर्गेश आर्य, मंत्री

आर्यसमाज सन्देश विहार के मल्टीमीडिया हॉल के उद्घाटन पर महाशय धर्मपाल जी के साथ आचार्य अखिलेश्वर जी, श्री धर्मपाल आर्य एवं समाज के प्रधान श्री शशिभूषण मल्होत्रा।

आर्यवीर दल रहा–रहेगा प्राण आर्यों का : प्रान्तीय शिविरों पर विशेष

जीवन क्या और जीना क्या है, आकर सीखो इन शिविरों में

अपने परिवारों से बच्चों को भेजें आर्यवीर दल – आर्य वीरांगना दल के शिविरों में।

बड़े सौभाग्यशाली होंगे वे माता–पिता और पुत्र/पुत्रियाँ जो परस्पर एक–दूसरे के व्यवहार से सुखी व सन्तुष्ट होंगे। देखा यह जाता है कि कुछ युवक अपने माता–पिता को परम्परावादी कहकर, स्वयं को नवीन विचारधारा का संवाहक मानकर जैसे–तैसे तालमेल बिठाकर दिन निकाल रहे होते हैं। माता–पिता से पूछें तो उनकी दृष्टि में आज की युवा पीढ़ी सब सामाजिक व पारिवारिक मर्यादाओं को ताक पर रखकर बन्धन हीन उन्मुक्त जीवन जीना चाहती है। कुछ आधुनिक समाज विज्ञानी इस असन्तोष को जैनरेशन गैप कहकर इसकी अनिवार्यता पर ठप्पा लगा देते हैं। यह कोरा झूठ है। एक पीढ़ी का दूसरी पीढ़ी के साथ ये तथाकथित जैनरेशन गैप कब नहीं था? कब पिता– पुत्र ने साथ–साथ जन्म लेकर समझदारी भरा जीवन गुजारा? कुछ लोग कहते हैं कि आज विज्ञान का युग है, ज्ञान का विस्फोट हो रहा है। नई पीढ़ी नवीन वैज्ञानिक ढंग से जीवन जीना चाहती है तथा पुरानी पीढ़ी पुराने विचारों की परम्परागत परिपाटी से बँधी हुई हैं।यह खटपट नए और पुराने विचारों का संघर्ष है। जब किसी को मरना ही हो तो कैसे भी तर्क देकर पतनगामी प्रवृत्तियों को परिपुष्ट किया जा सकता है। विज्ञान आपको शारीरिक सुख–सुविधा के साधन उपलब्ध करवाने से आगे बढ़कर आपकी जीवन शैली के साथ छेड़छाड़ क्यों करने लगा? टी.वी., टेलीफोन, मोबाइल, कम्प्यूटर, लैपटॉप एवं अन्य संचार सुविधाएँ हमें हमारे पारिवारिक अपनेपन की धज्जियाँ उड़ाने के लिए कब कहती हैं? विज्ञान की चकाचौंध में अन्धी होकर ब्रेकफेल वाहन की तरह सरपट दौड़ती इस युवा पीढ़ी से पूछा जाए कि क्या ये मोबाइल केवल प्रेम की परिभाषा में ढाल दी गई वासना में डूबे हुए दोस्तों से घण्टों बतियाते रहने के लिए ही बने हैं? टी. वी. चैनलों पर अश्लीलता परोसने के लिए विज्ञान किसी को विवश करता है क्या? सामाजिक व पारिवारिक मर्यादाओं, नैतिकता और सदाचार, शालीनता और सादगी से जीवन जीने की शिक्षा देने वाले धारावाहिक प्रसारित करने में विज्ञान कोई रोड़े अटकाता है क्या?

सच यह है कि इस देश की युवापीढ़ी को पथभ्रष्ट करने के लिए विज्ञान का घोर दुरुपयोग हो रहा है और यह कुचक्र पाश्चात्य पथ भ्रष्ट लोगों द्वारा योजना बद्ध ढंग से चलाया जा रहा है। भारत की प्राचीन संस्कृति, सभ्यता व ऋषि–मुनियों की विरासत को नष्ट–भ्रष्ट करने का यह षड्यन्त्र कभी जैनरेशन गैप कहकर तो कभी आधुनिकता का नाम देकर बड़े ही सुनियोजित ढंग से चलाया जा रहा है। संचार माध्यम केवल फैशन के नाम पर फूहड़ता और आधुनिकता के नाम पर अश्लीलता फैला रहे हैं। हमें इस नई पीढ़ी को इस भयानक व्यामोह से निकालना ही पड़ेगा। आज तो शिक्षण संस्थानों के माध्यम से भी ऐसे निर्लज्ज प्रयास होने लगे हैं। ऐसी शिक्षा देने वाली किताबों को देखकर ही किसी ने लिखा था, 'हम ऐसी किताबों के काबिले जब्ती समझते हैं। जिन्हें पढ़कर बच्चे माँ बाप को खब्ती (पागल) समझते हैं।' सदाचार, शिष्टाचार व शालीनता की बात करना अपराध बन गया है। स्थिति बहुत बिगड़ चुकी है। कुछ भी हो, हम अपनी सन्तति को भोगवाद में धँसते हुए भी तो नहीं देख सकते। आर्यो! गम्भीरता से सोचो। अपनी सन्तान से अधिक प्रिय हमारे लिए कौन हो सकता है? हमें मानना पड़ेगा कि हमारे बच्चों के जीवन में आने वाली गिरावट के लिए कहीं न कहीं हम भी दोषी हैं। हमारे विद्वानों ने कहा है **'उग्रकर्मा भवेत् पुत्रो माता पिताश्च दोषत:'** अर्थात् बच्चे माता–पिता के दोषों के कारण ही उद्दण्ड होते हैं। हम समय रहते बच्चों को सम्भाल नहीं पाते, समय निकल जाने पर शिकायत करने का कोई लाभ नहीं। धन की धुन में सबसे महत्त्वपूर्ण काम सन्तति–निर्माण को भुला देने का परिणाम हमें व हमारे सम्पूर्ण राष्ट्र को भोगना पड़ता है। आज हम और हमारा राष्ट्र इसी भोग–संकट से जूझ रहा है।

एक कहावत है 'जब जागें तभी सवेरा'। कहते हैं–'प्रात: काल का भूला सायंकाल को घर लौट आए तो वह भूला नहीं कहलाता।' हम भी अब जाग जाएँ और अपनी संस्कृति की ओर लौट चलें, तो जो कुछ बचा है वह तो हाथ में रह जाएगा। तो चलो, हम अपने पुत्र–पुत्रियों को वैदिक संस्कृति के महान् आदर्शों के साथ जोड़ दें। ग्रीष्म कालीन अवकाश में आर्यसमाज विभिन्न स्थानों पर हमारे पुत्र–पुत्रियों को वैदिक संस्कृति से परिचित कराने के लिए शिविर आयोजित करता है। ये शिविर इतने बहुउद्देश्यीय होते हैं कि हमारे बच्चे अपनी वैदिक संस्कृति के साथ पूरी तरह घुलमिल जाते हैं। शिविरों की दिनचर्या एवं कार्यशैली कुछ इस ढंग की है कि धर्म, ईश्वर के सच्चे स्वरूप की जानकारी देने के साथ–साथ बालकों में राष्ट्रभक्ति, सामाजिक सद्भाव एवं अपने व्यक्तिगत जीवन और पारिवारिक कर्त्तव्य कर्मों की उत्तम शिक्षा दी जाती है। शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से धूम्रपान, मद्यपान से लेकर समस्त नशीली वस्तुओं के प्रयोग करने से होने वाली हानियों को वैज्ञानिक ढंग से समझाया जाता है। इनसे बचने के लिए बच्चों को प्रेरित किया जाता है। एक व्यवस्थित और सुविधाजनक दिनचर्या व परस्पर के सहयोग की भावना को जीवन का अंग बनाने का प्रयास शिविरों में किया जाता है। बालक के अन्दर छिपी हुई प्रतिभा को टटोल कर उसे उत्साह देकर उभारने के लिए विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ शिविर का महत्वपूर्ण अंग होती हैं। आसन–व्यायाम से लेकर प्राणायाम तक का अभ्यास प्रशिक्षित स्त्री–पुरुषों द्वारा कराया जाता है। जूडो–कराटे के साथ लाठी, तलवार चलाने जैसी आत्मरक्षा की नवीन–प्राचीन कलाएँ बालकों को बड़ी सावधानी एवं संजीदगी से सिखाई जाती हैं।

– **शेष पृष्ठ 6 पर**

प्रथम पृष्ठ का शेष

यज्ञ परोपकार का ....

(टंकारा) ने कहा कि यज्ञ की अग्नि हमें सदा आगे बढ़ने का संदेश देती है कि हम सब मिल–जुलकर राष्ट्र की उन्नति की ओर बढ़ें। महायज्ञ के संयोजक श्री अर्जुन देव चड्ढा ने कहा कि श्रीराम ने अश्वमेध यज्ञ किया था। हमें सबकी उन्नति के लिए एकजुट होकर प्रयास करना चाहिए। इस अवसर पर आयोजित रक्तदान शिविर के मुख्य अतिथि श्री विजय सिंह भाटी (प्रधान प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा राज0) ने रक्तदाताओं से कहा कि आपके रक्तदान से किसी का जीवन भी बच सकता है। रक्तदान के प्रति शुरू–शुरू में भय होता है परंतु उसके बाद आत्मिक शान्ति मिलती है। सर्वश्री धर्मपाल जी आर्य, आचार्य विद्यादेव, वेदप्रकाश गुप्ता, अर्जुनदेव चड्ढा, श्रीमती सुमन शृंगी एवं सुश्री राधा सचदेवा आदि ने भी शिविर के महत्व पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर आयोजित महिला जागृति सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री विजय सिंह भाटी ने कहा कि आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने नारी उत्थान के लिए अनेक कार्य किए और आज भी आर्यसमाज इस क्षेत्र में कार्य कर रहा है।

*– **अरविन्द पाण्डेय, मीडिया प्रभारी***

महिला जागृति सम्मेलन को सम्बोधित करते राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री विजय सिंह भाटी तथा इस अवसर पर मंचस्थ अतिथिगण।

कोटा के आर्यनेता श्री अर्जुन देव चड्ढा को 'राष्ट्रीय पंजाबी रत्न अवार्ड'

कोटा और उसके आसपास के क्षेत्रों में आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार में बढ़–चढ़ कर भाग लेने वाले श्री अर्जुन देव जी चड्ढा बचपन से ही आर्यसमाज से जुड़े हैं। वे हमेशा जरूरतमन्द लोगों के लिए कोई न कोई कल्याणकारी काम करते ही रहते हैं। 66 वर्षीय श्री चड्ढा जी की सामाजिक लोकप्रियता के लिए यह जुमला कोटा के लोगों में प्रसिद्ध हैं– ''मुद्दा अगर पीड़ित मानव का हो तो अर्जुनदेव चड्ढा कभी भी और कहीं भी पहुंच सकता है।'' प्राणिमात्र की सेवा को अपने जीवन का लक्ष्य बनाने वाले श्री चड्ढा कभी स्वाइन फ्लू के पीड़ितों को दवा पिलाते हैं, तो कभी सर्दी में ठिठुरते लोगों में कम्बल वितरित करते हैं। वह नशा मुक्ति के खिलाफ जनजागरण अभियान चलाते हैं। विद्यालयों में जाकर गरीब विद्यार्थियों को पुस्तकें–कापियां नि:शुल्क वितरित करते हैं। मलिन बस्तियों में सफाई अभियान चलाते हैं। ऐसे सेवाभावी और आर्यसमाज के कर्मठ नेता श्री चड्ढा जी को 4 अप्रैल, 2010 को पंजाबी समाज के राष्ट्रीय अधिवेशन में राष्ट्रीय पंजाबी रत्न अवार्ड से सम्मानित किया गया। उनके सामाजिक कल्याणकारी कार्यों से प्रभावित होकर दिवंगत राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी ने कहा था– ***''उनमें निर्बाध गति से चुपचाप चलनेवाले योगी की सी अदा है। ऐसे ही व्यक्ति समाज के लिए प्रेरणास्रोत होते हैं।''*** आशा है कि भविष्य में भी वे समाज सेवा के कार्यों को इसी प्रकार संपन्न करते रहेंगे।

श्री अर्जुन देव चड्ढा को सम्मानित करते पंजाबी समाज के अधिकारीगण।

आर्यवीर दल के ग्रीष्मकालीन शिविर कार्यक्रम

सार्वदेशिक आर्यवीर दल का राष्ट्रीय शिविर 31 मई से 13 जून

सार्वदेशिक आर्यवीर दल द्वारा 31 मई से 13 जून 2010 तक गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद (हरियाणा) में राष्ट्रीय शिविर लगाया जा रहा है। शिविर में शाखानायक, उप व्यायाम शिक्षक एवं आचार्य श्रेणी का शारीरिक और बौद्धिक पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रवेश शुल्क 250/ है।

कमांडो – नियुद्धाचार्य के लिए 14 से 27 जून तक गुरुकुल पौन्धा, देहरादून (उत्तराखण्ड) में शिविर लगाया जा रहा है। इस शिविर में उप व्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक ही भाग ले सकेंगे, जिनका चयन राष्ट्रीय शिविर में ही किया जायेगा।

पौंधा पहुंचने का मार्ग– देहरादून बस या रेलमार्ग से पहुँचकर पांवता साहिब जाने वाली बस में नन्दा की चौकी अथवा टैम्पो से प्रेमनगर और वहाँ से नन्दा की चौकी उतरें। नन्दा की चौकी से टैम्पो या पैदल गुरुकुल पौन्धा पहुँचें। विशेष जानकारी के लिए **आचार्य श्री ऋषिपाल से (मो0 09811687124)** सम्पर्क करें।

आर्य वीर दल दिल्ली : चरित्र निर्माण एवं प्रशिक्षण शिविर 20 से 30 मई

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश द्वारा 20 मई से 30 मई तक चरित्र निर्माण एवं प्रशिक्षण शिविर एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग (पश्चिम), नई दिल्ली–26 में आयोजित किया जा रहा है। प्रवेशार्थी की न्यूनतम आयु 14 वर्ष होनी चाहिए। अधिक जानकारी के लिए **श्री वीरेन्द्र आर्य (संचालक) से मो. 9811130250 पर** सम्पर्क करें।

आर्य वीरांगना दल दिल्ली : चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षण प्रशिक्षण शिविर 16 से 23 मई

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश द्वारा 16 मई से 23 मई तक चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षण प्रशिक्षण शिविर 16 से 23 मई आर्यसमाज रोहिणी सेक्टर –7, दिल्ली 85 में चरित्र निर्माण एवं आत्म प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। प्रवेशार्थी बालिका की न्यूनतम आयु 12 वर्ष होनी चाहिए। शिविर का शुल्क 250/ है। जानकारी के लिए **श्रीमती वीणा आर्या से (मो. 9810061263)** सम्पर्क करें।

आर्य वीर एवं शाखा नायक स्तरीय प्रशिक्षण शिविर – इलाहाबाद 6 मई से 16 मई

आर्य वीर दल मंडल इलाहाबाद एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में आर्य वीर एवं शाखा नायक स्तरीय प्रशिक्षण शिविर 6 मई से 16 मई 2010 तक आर्यसमाज कृष्णनगर 529 के. एल. कीडगंज इलाहाबाद में आयोजित किया जा रहा है। शिविरार्थी की आयु 14 वर्ष से 25 वर्ष तक होनी चाहिए। प्रवेश शुल्क मात्र 100 रुपये है। जानकारी के लिए शिविर **संचालक श्री दिनेश आर्य से (मोबा. 09335479095) सम्पर्क कर सकते हैं।**

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्त्वावधान में आर्यसमाज अजमेर के सहयोग से

व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण राष्ट्रीय शिविर

दिनांक : 6 जून से 13 जून, 2010 स्थान : शुक्ला गार्डन, आदर्श नगर अजमेर (राजस्थान)

उद्घाटन : रविवार 6 जून, 2010 सायं 5 बजे **समापन : रविवार 13 जून, 2010 प्रातः 10 से 1 बजे**

विशेष: वीरांगना की आयु कम से कम 14 वर्ष हो। ऋतु अनुसार बिस्तर, भोजन के बर्तन, टार्च, लाठी, मग, साबुन आदि साथ लाएं। शिविर का गणवेश 2 जोड़ी अवश्य साथ लाएं। कोई भी कीमती सामान/पैसा साथ न लाएं। **शिविर शुल्क 150/– रुपये** प्रति शिविरार्थी होगा। सभी शिविरार्थी अपना **पंजीकरण 30 मई तक** अवश्य करा लेवें। शिविरार्थी 6 जून को दोपहर 12 बजे तक शिविर स्थल पर अवश्य पहुंच जाएं। शिविर के मध्य अभिभावकों से मिलना वर्जित होगा।

सभी प्रान्तीय सभाओं व जिला समाजों से जहां–जहां भी वीरांगना दल की शाखाएं लगती हैं वे अपनी चुनी हुई कम से कम दो वीरांगना जो कम से कम दो शिविर में शामिल हुई हों, इस शिविर में भेजकर लाभ उठाएं।

–: निवेदक :–

साध्वी उत्तमा यति	मृदुला चौहान	अंजु बजाज	विमला मलिक
प्रधान संचालिका (9582385950)	संचालिका (9810702760)	सचिव (51550176)	कोषाध्यक्ष (9810274318)

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल

सोमरत्न आर्य, प्रधान **प्रो. रासासिंह रावत**, संरक्षक **चिरंजीलाल शर्मा**, मन्त्री

आर्यसमाज अजमेर (राजस्थान)

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में

29 वां वनवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर

दिनांक 16 मई से 30 मई, 2010

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ गत 29 वर्षों से शिविर लगाता आ रहा है। शिविर में असम, नगालैंड, मिजोरम, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ एवं उड़ीसा आदि प्रान्तों से युवक–युवतियां भाग लेते हैं। शिविर में उन्हें वैदिक भारतीय संस्कृति की जानकारी दी जाती है और उनमें राष्ट्रप्रेम की भावना को जागृत किया जाता है। इस वर्ष भी माता प्रेम लता जी शास्त्री की अध्यक्षता में **29 वां वनवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर 16 से 30 मई 2010 तक आर्यसमाज रानी बाग** में आयोजित किया जा रहा है। शिविर में 150 से 200 युवक–युवतियों के भाग लेने की संभावना है। उनके आवास, भोजन एवं पाठ्य सामग्री आदि में लाखों रुपये व्यय होता है। कृपया दानी महानुभाव चैक/ड्राफ्ट अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के पक्ष में आर्यसमाज रानी बाग के पते पर भेजें। मुक्त हाथों से दान देकर इस आयोजन को सफल बनावें।

– प्रेमलता शास्त्री, महामन्त्री

कृपया देखें और प्रतिक्रिया दें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
www.delhisabha.com
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
www.aryasabha.com
अमूल्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश
www.satyarthprakash.com
महर्षि दयानन्द सरस्वती
www.swamidayanand.com
आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश
www.aryaveerdal.org
आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली
www.aryakendriyasabha.com
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
aryamahasammelan.com

पृष्ठ 5 का शेष

कुल मिलाकर आर्यवीर एवं आर्य वीरांगना दल के इन शिविरों में बालक–बालिकाओं के व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास का पूरा प्रयास किया जाता है। शिविरों में भाग लेने वाले अनेक बालकों का काया कल्प हो चुका है। शिविरों में बच्चों को जो कुछ सिखाया जाता है, वह सब बड़ी मनोरंजक शैली में, या यूँ कहें कि खेल–खेल में जीवन–निर्माण का काम इस ढंग से किया जाता है कि बालकों को लगता है मानो वे छुट्टियों का आनन्द ले रहे हों। आजकल बच्चे छोटी–छोटी बातों को लेकर तनाव, अवसाद और अनिद्रा आदि के शिकार हो जाते हैं, लेकिन आर्यवीर दल और आर्य वीरांगना दल के शिविरों में जीवन के संघर्षों से जूझने वाला उत्साह एवं आत्मबल कूट–कूट कर भर दिया जाता है।

इन शिविरों की विशेषता के बारे में जितना कहा जाए उतना ही कम है। कुल मिलाकर हमारी युवा पीढ़ी के जीवन को सही दिशा देकर, युवक–युवतियों को परिवार, समाज व राष्ट्र का एक सभ्य, संवेदनशील नागरिक बनाना ही इन शिविरों का मूल उद्देश्य है। हम आपके पुत्र–पुत्रियों के विचारों और उनके व्यवहार को ऐसा बनाना चाहते हैं, कि वे अपना स्वयं का परिवार समाज व राष्ट्र का कल्याण कर सकें। आप हमें अपना बालक दो, हम आपको एक श्रेष्ठ व्यक्तित्त्व में ढालकर उसे लौटा देंगे। माता–पिता होने के कर्तव्यों का पालन आप किन्हीं कारणें से न कर सके हैं तो ये शिविर आपको भूल सुधार का एक अवसर देते हैं। माता–पिता ही नहीं, हमारे नौनिहाल युवक–युवतियाँ भी अपने जीवन को सुखी, समृद्ध एवं सुसभ्य बनाने के लिए स्वयं इन शिविरों में भाग लें, अपने मित्रों को भी प्रेरणा करें कि वे भी इन शिविरों में अवश्य भाग लें। पूरे भारत में हर प्रान्त और लगभग हर जिले में इस प्रकार के शिविर लगाए जाते हैं। इन शिविरों की सार्वजनिक सूचनाएँ प्रसारित की जाती हैं। अपनी सुविधानुसार आप कहीं भी इन शिविरों का लाभ ले सकते हैं। ये शिविर इसीलिए लगाए जाते हैं, जिससे इच्छुक माता–पिता या युवक–युवतियाँ इनका लाभ उठाकर जीवन को समझ सकें, जीने की कला सीख सकें। आइए,एक नए, सफल और सुख–शान्ति से भरपूर जीवन की सुहानी सौगात लिए हम आपके स्वागत के लिए तैयार खड़े हैं। हमारी एक ही कामना है, एक ही संकल्प है, और वह है युवा पीढ़ी को सच्चे सुख, सच्ची शान्ति और सच्चे आनन्द से भरपूर देखना। आइए, आप भी एक कदम हमारी ओर बढ़ाइए।

शिविर में गाया जाने वाला गीत

आकर सीखो इन शिविरों में

जीवन क्या और जीना क्या है, आकर सीखो इन शिविरों में
फटे हुए दिल सीना क्या है, आकर सीखो इन शिविरों में
आज बिगड़ती ही जाती है, हम सबकी यह जीवन–शैली।
कुविचारों, दूषित आहारों, से तन–मन की चादर मैली।।1।।

खाना क्या और पीना क्या है, आकर सीखो इन शिविरों में।
जीवन क्या और जीना क्या है, आकर सीखो इन शिविरों में।।
मौज मस्तियाँ, मटरगश्तियाँ, जीवन को भटका देती हैं।
छोटी–छोटी भूलें मिलकर बिजली सा झटका देती हैं।।2।।

फैलाया क्या, बीना क्या है, आकर सीखो इन शिविरों में।
जीवन क्या और जीना क्या है, आकर सीखो इन शिविरों में।।
भोग रहे हैं जो जीवन को, जितनी भौतिक सुख सुविधाएँ।
आज नहीं तो कल भोगेंगे, वे उतनी ही दुःख दुविधाएँ।।3।।

श्रम का सार पसीना क्या है, आकर सीखो इन शिविरों में।
जीवन क्या और जीना क्या है, आकर सीखो इन शिविरों में।।
ऋषियों के पावन आदर्शों को अपने जीवन में लाओ।
मार्च–फरवरी, जून–जनवरी, ईस्वी–सन् को दूर भगाओ।।4।।

सृष्टि संवत् और महीना क्या है, सीखो इन शिविरों में।
जीवन क्या और जीना क्या है, आकर सीखो इन शिविरों में।।
शोषण और कमाई में हम अन्तर करना भूल गए हैं।
सुख पाने के अभियानों के, प्रतिफल प्रतिकूल गए हैं।
जीवन क्या और जीना क्या है, आकर सीखो इन शिविरों में।।5।।

– रामनिवास 'गुणग्राहक', दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

– जारी पृष्ठ 5 प

आर्यसमाज नया बांस दिल्ली–6 का

90वां वार्षिकोत्सव 17 से 23 मई

यज्ञ– प्रातः 7.00 से 8.30 बजे,
प्रवचन एवं भजन 8.30 बजे से 9 बजे
ब्रह्मा एवं प्रवक्ता– आचार्य विष्णु दत्त जी शास्त्री (17 से 19 मई) एवं आचार्य नवल किशोर शास्त्री (20 से 23 मई)
भजनोपदेशक – श्री भानुप्रकाश शास्त्री
महिला सम्मेलन– 20 मई, मध्याह्न 2 से 5 बजे, मुख्य वक्ता आचार्या पवित्रा जी
पूर्णाहुति–समापन– 23 मई, 7.30 बजे से 10.30 बजे। आप सब अधिकाधिक संख्या में पधार कर धर्मलाभ उठाएं।

गुरुकुल दयानन्द कल्याण आश्रम, रायपुर, कुशी आपाल, केन्द्रपड़ा (उडीसा)

यज्ञशाला के निर्माणार्थ सहयोग की अपील

गुरुकुल में यज्ञशाला का निर्माण कार्य चल रहा है। यह निर्माण कार्य आप दानी महानुभावों के सहयोग से ही पूरा होना सम्भव है। इस पुण्य कार्य के लिए दानी महानुभाव अपना आर्थिक सहयोग ***स्टेट बैंक खाता नं. 30460127167*** में जमा कर सकते हैं।

– सुदर्शन शास्त्री, मन्त्री

स्वामी ओमानन्द सरस्वती आर्ष गुरुकुल
रानीकोट, हासामपुरा, पो. लेकोड़ा, उज्जैन

प्रवेश प्रारम्भ

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक (हरियाणा) से मान्यता प्राप्त इस गुरुकुल में प्रवेश प्रारम्भ है। 10–12 वर्ष की आयु के कक्षा 5 तक शिक्षा प्राप्त बालकों का प्रवेश किया जायेगा। इच्छुक माता–पिता व अभिवावक अपने बालकों के प्रवेश के लिए पूरे विवरण के साथ सम्पर्क करें।

विशेष जानकारी हेतु स्वामी सत्यबन्धु (09313209347) सम्पर्क करें।

स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी को 'प्राइड ऑफ उत्तराखण्ड'

उत्तराखण्ड की राज्यपाल मार्ग्रेट आल्वा द्वारा 'दून सिटीजन्स काउन्सिल' की ओर से डॉ. स्वामी गुरुकुलानन्द को 'प्राइड ऑफ उत्तराखण्ड' से सम्मानित किया गया। आजकल स्वामी जी वेदों का उर्दू में अनुवाद कर रहे हैं। स्वामी जी के सम्मानित होने पर राष्ट्रवादी साहित्यकार मंच एवं आर्यजनों ने हर्ष जताया है।

– गंगादत्त जोशी, मंत्री

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय देलवाडा आबू पर्वत, जि0 सिरोही (राज0) का

20 वां वार्षिकोत्सव एवं वेदारम्भ संस्कार समारोह

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, देलवाडा आबू पर्वत का वार्षिकोत्सव एवं वेदारम्भ संस्कार समारोह 28–31 मई तक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर चतुर्वेद पारायण महायज्ञ : प्रात– 6–12 बजे तथा सायं– 4 से 7 बजे किया जाएगा। भजनोपदेश : रात्रि 8.30 से 10.30 होंगे।

यज्ञ की पूर्णाहुति–समापन 30 मई 2010 को होगी। आप सभी इसमें भाग लेकर धर्मलाभ उठावें।

– स्वामी धर्मानन्द, अध्यक्ष

आर्यसमाज अशोक विहार–1 दिल्ली में

यजुर्वेदीय यज्ञ 6 से 9 मई

यजुर्वेदीय यज्ञ– प्रातः 6 से 7.30 बजे
ब्रह्मा एवं प्रवक्ता– डॉ0 जयेन्द्र कुमार जी
भजन–प्रवचन– सायं 7.30से 9.30 बजे
भजनोपदेशक – राजवीर शास्त्री जी
पूर्णाहुति–समापन– 7 बजे से 12.30 बजे
आप सब अधिकाधिक संख्या में पधार कर धर्मलाभ उठाएं। *– राममेहर सिंह, मंत्री*

प्रथम पृष्ठ का शेष

राष्ट्रवादी भावना ......

लगीं। ऐसी स्थिति में आर्यसमाज की अपनी जिम्मेदारी क्या हो? उसे कैसे पूरा किया जाए? इन सारी बातों पर विचार करके अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की स्थापना सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में की गई। अच्छी बात यह थी कि इस संस्था का कार्य बहुत स्पष्ट था। उसके लक्ष्य थे– आदिवासी और वनवासी अंचलों में रहने वाले आदिवासी भाइयों को शिक्षा देना, उनको स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना, उनके जीवनस्तर को ऊँचा उठाना एवं उन्हें राष्ट्रीयता से जोड़े रखना। मध्य प्रदेश के आदिवासी जिले झाबुआ के थांदला ग्राम में पहली बालबाड़ी की नींव डाली गई। तत्पश्चात् आहिस्ता–आहिस्ता कार्य का विस्तार हुआ।

अचानक नगालैंड एवं उत्तरपूर्व में विद्युत की तेजी से बढ़ रहे ईसाईकरण की ओर ध्यान आकर्षित हुआ और बिना साधनों से चल पड़े दिल्ली से 3000 किमी. दूर। नगालैंड की भूमि दीमापुर पर किसी के सम्पर्क से कदम रख कर वहां यज्ञ कराया। यज्ञ कराने वाले से पृथ्वीराज शास्त्री जी ने भूमि की मांग की और वहां विद्यालय खड़ा करने का संकल्प पूरा किया। चार पंक्तियों में उन सभी कठिनाइयों का वर्णन करना असम्भव होगा, परन्तु सुधी पाठको! वहां की परिस्थितियों को जानने वाले महानुभाव सहज अनुमान लगा सकते हैं। उन दिनों वहां बिजली नहीं थी, हिन्दी बोलने–लिखने की पाबन्दी थी। ईसाई मिशनरियों का पूरी तरह से दबदबा था। सरकारी स्तर पर क्या सुरक्षा रही होगी इसे बहुत ठीक से कहा नहीं जा सकता किन्तु संकल्प था, सो वह पूरा हुआ और बढ़ता गया। तत्पश्चात् असम के बोकाजान में आश्रम नींव डाली गई। राजस्थान के बांसबाड़ा में आश्रम की नींव डाली गई। झारखण्ड, उड़ीसा, छत्तीसगढ़ एवं उत्तराखण्ड में अनेक बालबाड़ी केन्द्र खोले गए, जो चल रहे हैं। यह कार्यों का सुफल था कि नए–नए विद्यालयों के लिए दानदाताओं द्वारा जमीनें दी जाने लगीं और सरकार का भी योगदान प्राप्त होने लगा। वर्तमान में जो केन्द्र चल रहे हैं, उनकी कुछ सूचना थांदला यात्रा के दौरान आर्य सन्देश में प्रकाशित की गई थी। उत्तरपूर्व क्षेत्रों में चल रहे आश्रमों की सूचना आर्य सन्देश के गत अंकों में प्रकाशित की गई थी। अनेक बालबाड़ियों के बारे में जानकारी दे पाना संभव नहीं; किन्तु इतना अवश्य कहना चाहूँगा कि अनेक आश्रम इन कार्यों को विस्तार देने में जुटे हुए हैं। आर्यसमाज इन क्षेत्रों में अपने कार्यों में पीछे न रह जाए, इस पर गहराई से सोचना होगा; परन्तु इस सोचने में हमारा बहुत समय न लग जाए, इस पर भी सोचना आवश्यक है। शीघ्र ही हमें कुछ नई योजनाओं को अच्छे सूत्र में पिरोकर क्रियान्वयन की ओर ले जाना होगा। अधिसंख्य आर्यजनों को इन क्षेत्रों में हो रहे इन कार्यों की जानकारी नहीं रही होगी। आशा है, शीघ्र ही वहां पर आयोजित होने वाले वनवासी आर्य महासम्मेलन की औपचारिक घोषणा दयानन्द सेवा श्रम संघ द्वारा की जाएगी। वहां पर चल रहे कार्यों को आप स्वयं भी वहां जाकर देख सकेंगे एवं किये जा सकने वाले सहयोग का संकल्प लेंगे। जो आर्य महानुभाव दयानन्द सेवाश्रम संघ की इन रचनात्मक गतिविधियों में सहयोगी बनना चाहते हैं, वे अपना नाम, पता, एवं सम्पर्कसूत्र पत्र अथवा ई–मेल द्वारा हमारे पास पहुंचा दें ताकि दयानन्द सेवाश्रम की गतिविधियों की जानकारी आप तक पहुँचाई जा सके।

इन सभी कार्यों का केन्द्रीय कार्यालय दिल्ली में है और आर्यसमाज रानी बाग दिल्ली से संचालित हो रहा है। दिल्ली में यहां चल रहे कार्यो के सम्बन्ध में आगामी योजनाओं का गहराई से चिन्तन करने के संबंध में एक **अति विशेष बैठक 22 मई (शनिवार) 2010, 5.30 बजे आर्यसमाज सैनिक विहार** में रखी गई है। उसके पश्चात् भोजन की भी व्यवस्था होगी। जो आर्य महानुभाव इसमें गहरी रुचि रखते हों वे इस बैठक में भाग लेने की सूचना **श्री सतीश चड्ढा जी को (011–20013123)** दे देवें।

(लेखमाला समाप्त)

– विनय आर्य, महामन्त्री

गोमांस परोसने के विरोध में प्रस्ताव भेजने का निवेदन

भारत सरकार राष्ट्रमंडल खेलों में गोमांस परोसने के मंसूबे को पूरा करने के लिए गत चार महीने से प्रयास कर रही है। लेकिन गोमांस निषेध अभियान समिति हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि तथा उनकी सामाजिक संस्थाओं के सहयोग से इसका विरोध कर रही है। आप भी अपनी संस्थाओं से इसके विरोध में प्रस्ताव अपने लैटर हैड पर– **राष्ट्रपति**, राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली, **प्रधानमंत्री,** 7 रेसकोर्स, नई दिल्ली, **श्री एम.एस. गिल (खेल मन्त्री)** भारत सरकार, नई दिल्ली, **श्रीमती सोनिया गांधी** एवं **श्री राहुल गांधी,** 10 जनपथ नई दिल्ली एवं **संयोजक गोमांस अभियान निषेध समिति 249, कादंबरी, सैक्टर–9, रोहिणी, दिल्ली–85** को भेजने का कष्ट करें ताकि सरकार को बाध्य किया जा सके कि वह खेलों में गोमांस परोसने के निर्णय को वापस ले।

– स्वामी सत्यबन्धु सरस्वती, संयोजक

आर्यसमाज सैजपुर बोघा द्वारा एसएमएस सेवा प्रारम्भ

प्रतिदिन नियमित वैदिक विचार, महर्षि दयानन्द के विचार, पर्व सूचना अपने मोबाइल पर प्राप्त करने के लिए "आर्यसमाज सैजपुर" के द्वारा निःशुल्क एसएमएस सेवा प्रारम्भ की गई है। इसका लाभ लेने के लिए आप अपने मोबाइल से एक बार 9870807070 पर यह संदेश ON ARYASAMAJ SAIJPUR भेजें। केवल प्रथम संदेश शुल्क लगने के बाद आपको नियमित निःशुल्क संदेश आपके मोबाइल पर मिलता रहेगा। आर्यसमाज सैजपुर की वेबसाइट http://sites.google.com/site/aryasamajsaijpur पर 'मनसा परिक्रमा' गुजराती मासिक पत्रिका वेबसाइट पर निःशुल्क उपलब्ध है।

शोक समाचार

श्री वाचोनिधि आर्य को मातृशोक

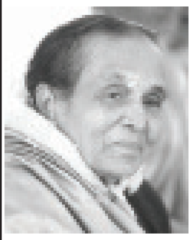

आर्यसमाज गांधीधाम के युवा मंत्री एवं जीवन प्रभात (गांधीधाम) के संयोजक श्री वाचोनिधि आर्य की पूज्या माता श्रीमती ज्योत्स्ना रानी धर्मपत्नी स्व0आचार्य श्री रामचन्द्र जी आर्य (पं0 ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के शिष्य) का 2 मई, 2010 को दिल्ली में आकस्मिक निधन हो गया। 3 मई को गांधीधाम में वैदिक रीति के अनुसार उनका अन्त्येष्टि संस्कार किया गया। इस अवसर पर आर्यसमाज गांधीधाम और आसपास की आर्यसमाजों के पदाधिकारी एवं सदस्यों के साथ–साथ अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे। वे 70 वर्ष की थीं।

वे डॉ. प्रज्ञा देवी जी की छोटी बहिन थीं। वे अपने पीछे चार पुत्र श्री अखिलेश आर्य, श्री वेदरुचि आर्य, श्री विश्वप्रिय आर्य एवं श्री वाचोनिधि आर्य एवं पुत्री श्रीमती सुनृता आर्या को छोड़ गयी हैं। सभी पुत्र और पुत्री विवाहित हैं। वे आर्यसमाज के प्रति निष्ठावान थीं और उन्होंने अपने पुत्रों और पुत्री को आर्यसमाज के संस्कार दिये।

डॉ. जनार्दन जी बाघमारे को पत्नीशोक

आर्यसमाज के प्रसिद्ध कार्यकर्ता एवं लातूर के सांसद डॉ. जनार्दन जी बाघमारे की धर्मपत्नी श्रीमती सुलोचना देवी का 23 अप्रैल, 2010 को निधन हो गया। श्रीमती सुलोचना देवी की प्रारंभिक शिक्षा दैवीय आश्रम कन्या गुरुकुल बेगमपेठ हैदराबाद में हुई थी। उनके निधन पर आर्यसमाज के गणमान्य महानुभावों ने गहरा शोक प्रकट किया है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक–संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पद्चिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। –सम्पादक

❖ साप्ताहिक आर्य सन्देश ❖

3 मई, 2010 से 9 मई, 2010

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-११/६०७१/२००९-२०११
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक ०६/०७-०५-२०१०
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३९/२००९-११
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

प्रतिष्ठा में,
श्री.........................

आर्य परिवारों के विवाह योग्य युवक–युवतियों का परिचय सम्मेलन पंजीकरण यथाशीघ्र कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) द्वारा प्रारंभ की गयी आर्य परिवार विवाह संयोग सेवा के लिए पंजीकरण किया जा रहा है। कुछ आर्य जनों ने इसके लिए 28 फरवरी को आयोजित आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह में पंजीकरण कराया था। उपलब्ध फार्मों के आधार पर विवाह डायरेक्टरी के प्रकाशन की प्रक्रिया शुरू कर दी गयी है। परिचय सम्मेलन से 15 दिन पूर्व पंजीकृत महानुभावों को डायरेक्टरी उपलब्ध करा दी जायेगी। **यह सम्मेलन जून 2010 में आर्यसमाज पंजाबी बाग (प0) में होना प्रस्तावित है।** अत: जो आर्य महानुभाव विवाह योग्य अपने पुत्र/ पुत्रियों का पंजीकरण कराना चाहते हैं, वे 5/– रुपये का डाक टिकट लगा अपना पता लिखा लिफाफा भेजकर पंजीकरण फार्म सभा कार्यालय से मंगा सकते हैं अथवा सभा की वैबसाइट www.delhisabha.com से डाउनलोड कर सकते हैं। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **100 रुपये (एक सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट** संलग्न कर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1'** के पते पर भेज दें। इस संबंध में विशेष जानकारी के लिए इस योजना के **संयोजक श्री गोविन्द लाल जी (मोबा. 9811623552) एवं श्री कंवरभान खेत्रपाल जी** (9210484859) से संपर्क कर सकते हैं। *– विनय आर्य, महामंत्री , 9958174441*

आर्यसभा मॉरीशस का निर्वाचन सम्पन्न

विश्व भर में लघु भारत के रूप में जाने जाने वाले मॉरीशस गणराज्य उत्थान और विकास में परम सहयोगी संस्था आर्य सभा मॉरीशस का निर्वाचन गत दिनों सभा मुख्यालय महर्षि दयानन्द मार्ग, पोर्ट लुइस (मॉरीशस) में सम्पन्न हुआ। इस निर्वाचन में **प्रधान** के रूप में **श्री एच. रामधनी जी, उप प्रधान** के रूप में **श्री सत्यदेव प्रीतम**, **मन्त्री** के रूप में **श्री बालचन्द तनाकूर, उपमन्त्री** के रूप में **श्री उदय नारायण गंगू** को निर्वाचित घोषित किया गया। मॉरीशस में आर्यसमाज के स्तम्भ स्व. श्री मोहन लाल जी मोहित के सुपुत्र **श्री राजेन्द्र मोहित जी** को **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए प्रतिनिधि** मनोनीत किया गया।

समस्त नव निर्वाचित पदाधिकायों को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज अशोक विहार–1 दिल्ली– 110052

प्रधान : श्री अविनाश चन्द्र कपूर
मन्त्री : श्री राम मेहर सिंह
कोषाध्यक्ष : श्री ओमप्रकाश गुप्ता

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू–कश्मीर

आर्यसमाज बक्शी नगर, जम्मू

प्रधान : श्री भारत भूषण गुप्ता
मन्त्री : श्री राकेश चौहान
कोषाध्यक्ष : श्री सत्यवीर गुप्ता

नेमस्लिप्स

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने की छोटी सी शुरुआत : कापी–किताबों पर चिपकाने के लिए नेमस्लिप्स। 18 स्लिप्स का एक सैट मात्र 5/– रुपये प्रति शीट।

प्राप्ति स्थान : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1
दूरभाष : 23360150, 23365959

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1
कार्य एवं गतिविधियों को जानने के लिए लॉगऑन करें
www.delhisabha.com

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५–हनुमान रोड नई दिल्ली–१; फोन : २३३६०१५०; टैलीफैक्स २३३६५९५९; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र० राजसिंह आर्य   सह सम्पादक : विनय आर्य   व्यवस्थापक : सुशील महाजन   सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर